2015-16

Issue-4 Vol-2
APRIL 2015

SHODHANKAN

Quarterly
International
Multi - Disciplinary
Refereed & Reviewed
Research Journal

Chief Editor
Dr. Radhakrishna Joshi

S.No.	Paper Name	Name	Page No.
१५	आदिवासी वारली जमातीची ऐतिहासिक पार्श्वभूमी व आजची परिस्थिती	प्रा. घनकुटे एस.जी.	६४ ते ६९
१६	श्री. समर्थ संप्रदायाचे कार्य	डॉ. गर्जे अनिल सौ. काळे जे. यू.	७० ते ७३
१७	संत तुकारामांच्या अभंगातील लोकतत्वे	डॉ. गर्जे अनिल प्रा. नेटके राजेश	७४ ते ७९
१८	लोक साहित्य चिन्तन	डॉ. मिर्झा ए.आर.	८० ते ८२
१९	हिंदी कहानियों में मानवीय संवेदना	सौ. कुटे एम.आर.	८३ ते ८७
२०	'Nora As A Pragmatic Woman Of Self-Respect' In Ibsen's *A Doll's House*	Dr. Nistane Ravindra	८८ ते ९१
२१	Representing The Postcolonial Subaltern Issues: A Study Of Manju Kapur's *Difficult Daughters*	Prof. Shantilal Ghegade	९२ ते ९७
२२	Theme of Patriotism in The Writing of Chetan Bhagat	Prof.Ganesh Sonawane	९८ ते१०३
२३	A Studyofindian Culture And Philosophy In Raja Rao's The Serpent And The Rope	Prof. Kalyan Sonawane	१०४ते१०७
२४	Situation Of Drinking Water In Rural Area Of Maharashtra	Asst. Prof. Magar S. R.	१०८ते११२
२५	''रायगड जिल्हयाच्या विकासात औद्योगिक क्षेत्राचे योगदान''	डॉ. बोबडे एम.व्ही. श्री. देशमुख व्ही.व्ही.	११३ते११७
२६	Indian Cooperate Debt Market	Prof. Rita Raut	११८ते१२२
२७	लोकशाही प्रक्रियेत महाराष्ट्राच्या राजकारणात भटक्या जमातीतील वंजारी समाजाची ऐतिहासिक पार्श्वभूमी, भुमिका व स्थान	प्रा. उगले व्ही. ए.	१२३ते१२८
२८	महाराष्ट्रातील वाढती गुन्हेगारी एक समस्या	प्रा. भोसले एस.ई	१२९ते१३२
२९	"Plateau in Modern Spacing Method Use in South India: Trends, Determinants and Implications for Policy and Programs"	Prof. Gosavi N.K.	१३३ते१३८
३०	Parenting Style	Dr.A.A.Kulkarni & Prof.B.K.Thorve	१३९ते१४२

Impact Factor No: 0.421

HINDI
ISSN – 2250-0383
RNI-02988/13/01/2011-TC

लोक साहित्य चिन्तन

डॉ.मिर्झा असदबेग रुस्तुमबेग
मिल्लिया कला,विज्ञान एवं व्यवस्थापन शास्त्र महाविद्यालय, बीड. मोबा ९८८१२५७८७९

आशय -

लोक साहित्य में अनेक संस्कृतियाँ समाहित हैं। वसतुतः लोक 'शब्द' संस्कृत के 'लोकदर्शने' धातु में 'धात्र्' प्रत्यय के जुड़ने से सृजित हुआ है। लोक शब्द का अर्थ है- देखना। इसका लट् लकार में अन्य पुरुष एक वचन का रुप है-लोकते । इस प्रकार यह सिद्द होता है की लोक का अर्थ है देखने वाला। इस प्रकार वह समस्त जन समुदाय जो इस क्रिया को करता है-लोक कहलाता है। वैदिक संस्कृत में लोक शब्द का अर्थ भुवन है। संस्कृत तथा हिंन्दी के अनेक ग्रंन्थों मं चौदह लोकों की चर्चा हुई है इसमें से सात लोक पृथ्वी के नीचे तथा सात लोक पृथ्वी के ऊपर बताये गये है।

पृथ्वी के नीचे के सात लोक इस प्रकार हैं-

१. अतल, २. वितल, ३. सुतल, ४. तलातल, ५.रसातल, ६. महातल, ७. पाताल, १. पृथ्वी के ऊपर के सात लोक इस प्रकार बताये गये हैं-१. भूलोक, २, भु:लोक, ३. स्वर्गलोक, ४.महालोक, ५.जनलोक, ६.तपलोक, ७. सत्यलोक अथवा ब्रह्मलोक लोक शब्द में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड समाहित है और यही लोक शब्द का व्यापक अर्थ है। साहित्य के क्षेत्र में लोक शब्द का प्रयोग सीमित एवं विशिष्ट अर्थ में होता है। शनै :- शनै : इसका फलक संकुचित होने लगा । इसी सम्बन्ध में रामचरितमानस की चौपाई का एक उदाहरण इस प्रकार है-

"लोकहु वेद विदित इतिहासा ।
यह महिमा जानहिं दुरबासा ।।
लोक वेद सब भाँतिहिं नीचा ।
जासु दाँह धुइ लेइअ सींचा ।।"[1]

भारत में आर्यों के आगमन के पश्चात आर्य और अर्यतर जातियों के मध्य वेद और वेदेतर स्थिति का अविर्भाव हुआ। ऐसी स्थिति में लोक शब्द का प्रयोग वेदेतर अथवा शास्तेतर के लिए होने लगा । यहाँ पर लोक शब्द वेद विरोधी अर्थ का सूचक है। परन्तु यही लोक शब्द आगेचलकर वेदेतर संस्कृति की संकुचित सीमा को तोड़कर ऊँचा उठ गया। लोक तथा वेद ये दोनों शब्द अपने-अपने स्थान पर स्वतत्र हैं।

गीता में भी वेद से इतर लोक की सत्ता स्वीकार की गयी है। कृष्ण जी कहते हैं कि लोक और वेद में भी मैं पुरुषोत्तम नाम से प्रसिद्ध हूँ । यथा-

"यस्मात्क्षरमती तोड हमक्षरादीप चोत्तमः।
अतोडस्मि लोक वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः।।"[2]

"लोक साहित्य में लोक शब्द का सीमित अर्थ में प्रयोग होता है । इस सम्बन्ध में डॉ. सत्येन्द्र का मत है की- लोक मुनष्य समाज का वह वर्ग है, जो अभिजात्य संस्कार शास्लीयता और पाण्डित्य की चेतना अथवा अहंकार शून्य है और परम्परा के प्रवाह में जीवित रहता है ।"[3]

लोक साहित्य वह साहित्य है,जो मनोरंजन के लिए नही लिखा गया है। वास्तव में देखा जाये तो लोक साहित्य ग्राम्य भाषा में गाया गया प्रायः वह मौखिक साहित्य है, जिसमें लोक जीवन,उसका

इतिहास,आचार-विचार,व्यवहार,परम्परा अर्थात समस्त लोक सभ्यता एवं संस्कृति प्रतिध्वनित होती है और अधिकांश लोक साहित्य व्यक्ति विशेष का साहित्य नहीं होता है ।

लोक साहित्य का वर्गीकरण

विद्वानों ने लोक साहित्य का अपने-अपने मत के अनुसार वर्गीकरण किया है जो इस प्रकार है-

१. लोक गीत
२. लोक कथा
३. लोक कहानी
४. लोक गाथा
५. लोकनाट्य
६. चुटकुले,कहावते,पहेलियाँ,मंत्र आदि

लोकगीत- लोगीत समग्र जनजीवन के जीवन्त चित्र प्रस्तुत करने में सक्षम होते हैं। लोकगीतों का निर्माण कब और किसने किया ये प्रश्न अनिर्णित हैं। स्त्री और पुरुषों द्वारा गाये गये लोकगीत लोक रंजक होते हैं। यथा-

बादल गरजे बिजुली चमके
जियरा लरजे मोर सखिया
फागुन मस्त महीना हो लाल
फागुन में बुढ़ऊ देवर लगे---

लोक गाथा - लोकगाथा में गाथाएँ होती हैं। प्रायः लोकमानस से उद्भूत काल्पनिक कहानियाँ भी कुछ समय के उपरान्त ऐतिहासिक स्वरुप धारण कर लेती हैं। लोकगाथा में ग्रामगीत,नृत्यगीत,आख्यान गीत,

आख्यानक गीत,वीरगीत,वीर काल तथा वीर गाथा का समावेश होता है।

लोककथा- संस्कृत वाड्मय मं कथाओं की एक लम्बी परम्परा है। धार्मिक ग्रंथो च्यवन-सुकन्या की कथा, तथा नचिकेता की कथा,अग्नि-पक्ष कथा,पंचतंत,हितोपदेश,जातक माला तथा वैताल पचीसी आदि अनेक कथाएँ प्राप्त होती हैं।

लोकनाट्य - इसमें लोक जीवन से सम्बन्धित समस्त उत्सवों,पर्वों,त्योहारों और अनेक धार्मिक अवसरों पर लोक नाट्यों का अभिनय सम्मिलित होता है। यथा, रामलीला नौटंकी,भाण,तमाशा, चमरखा, करहरवा,माँच,भँवाई,जाता,किर्तन रास,गंभीर,ललित,गोंघल,बहुरुपिया,दशावतार तथा यक्षगान आदि।

चुटकुले,कहावतें,पहेलियाँ,मंत्र एवं लोकोक्तियाँ- लोकोक्तियाँ लोक की नीतिशास्त्र हैं जो जीवन के अनुभव सिद्द ज्ञान से निर्मति होती है। विशेष बात यह है कि ये सूत्र रुप में कही जाती हें। कहावतें, पहेलियों,मंत्र तथा चुटकुले भी लोक साहित्य मेंआते है। तथा-

ठठिया,तिरवा,तालगाँव,
हिजड़ौ के तीन गाँव।

इसी प्रकार एक लोकोक्ति इस प्रकार है-

बाँभन,बनिया,वेश्या,ये तीनों विष बेलि।
औरन मारें खेदिकै, ये मारे हँसि खेली ।।
हई बहेरा आँवला, धिउ शक्कर संग खाइ ।
हाथी दाबै कांख मइँ, सात कोस लइ जाइ।।
पानी बरसै आधा पूस।
आधा गेहूँ आधा भूस।।।

निष्कर्ष

प्रचीन काल से ही मनुष्य अपने जीवन की सुख-दु:ख की बातों को सरल और सहज ढंग से लोक साहित्य के विभिन्न रुपों में कहता आया है। लोक साहित्य जन-जीवन का आईना है। इस आईने में अशिक्षित जनता की भावनाओं का सुख-दु:ख भरी विविध मनोंवृत्तियों का प्रतिफलन होता है। लोक साहित्य में किसी भी देश की संस्कृति का परिचय पर्याप्त मात्रा में मिलता है। इतना ही नहीं लोक साहितय में भाषा का मूल प्रारंभिक रुप भी विद्यमान रहता है। लोक साहित्य हि किसी भी क्षेत्र या राष्ट्र विशेष की जातीय, राष्ट्रीय, सामाजिक,ऐतिहासिक तथा धार्मिक अवस्थाओं की सही जानकारी दे सकता है। लोक साहित्य के अध्यायन से अनेक नवीन तथ्य प्रकाश में आते है। लोक जीवन यथार्थ के करीब मिट्टी की सानिध्य में रहना वाला जीवन है।

संदर्भ सूची :

१. रामचरितमानस- गोस्वामी तुलसीदास,अयोध्याकांड पृ.सं.२१८,१९४
२. श्रीमद्भगवद्गीता
३. लोक साहित्य विज्ञान- डॉ.सत्येन्द्र,पृ.३